विषय-सूची

प्रथम अध्याय

विद्यापतिक काल निर्णय पृ० १-३१

द्वितीय अध्याय

विद्यापतिक रचनाक परिचय पृ० ३२-३५, अपभ्रंश रचना--कीर्त्तिलता पृ० ३६-३८, कीर्त्तिपताका पृ० ३८-३९ ।

संस्कृत रचना : भूपरिक्रमण पृ० ३९-४४, पुरुष परीक्षा पृ० ४४-४५, लिखनावली पृ० ४५, वर्षकृत्य पृ० ४६-४८, शैवसर्वस्वसार पृ० ४८-५०, गया पत्तलक पृ० ५०-५१, दानवाक्यावली पृ० ५२-५३, गंगावाक्यावली पृ० ५३, दुर्गाभक्ति तरंगिणी पृ० ५३, व्याड़िभक्ति तरंगिणी पृ० ५३-५४, विभागसार पृ० ५४-५९, गो-रक्ष-विजय नाटक पृ० ५९-६०, मणिमञ्जरी पृ० ६०-६१ ।

मैथिली : पदावली पृ० ६१-६२, निष्कर्ष पृ० ६२-६३ ।

तृतीय अध्याय

कर्णाट एवं ओइनवारकालीन मिथिलाक राजनीतिक स्थिति पृ० ६६-८९ नान्यदेव पृ० ६७-६८, गंगदेव पृ० ६८-६९, नरसिंहदेव पृ० ६९-७०, शक्तिसिंह पृ० ७०-७१, हरिसिंहदेव पृ० ७१-७५, कामेश्वर ठाकुर पृ०७५-७६ भोगीश्वर ठाकुर पृ० ७६-७७, गणेश्वर ठाकुर पृ० ७७-७८, कीर्त्ति सिंह पृ० ७८-७९, भवसिंह पृ० ८०, देवसिंह पृ० ८०-८१; शिवसिंह पृ० ८१-८३, लखिमा देवी पृ० ८३; पद्म सिंह पृ० ८३-८४; विश्वास देवी पृ० ८४-८५; नरसिंहदेव पृ० ८५; धीरसिंह पृ० ८६; भैरवसिंह पृ० ८६-८७, रामभद्र सिंहदेव पृ० ८७-८८; लक्ष्मीनाथदेव पृ० ८८-८९ ।

चतुर्थ अध्याय

नारिक स्थान : प्रेम पृ० १०८-१२१; विवाह पृ० १२१-१३४; बाल-विवाह पृ० १३४-१३९; बहु-विवाह पृ० १३९-१५८; माय पृ० १५८-१६२. सासु पृ० १६२-१६३; स्त्रीधन पृ० १६३-१६५; सती-प्रथा पृ० १६५-१७१; कुट्टनीक स्थान- पृ० १७१-१७४; वेश्याक स्थान पृ० १७४-१८१; निष्कर्ष पृ० १८२-१८५।

पंचम अध्याय

नारीक शृंगार प्रसाधन पृ० १८७-२०३; कपोल मंडल एवं मुँहक शृंगार पृ० १९७-१९८; आँखिक शृंगार पृ० १९८-२००; कण्ठक शृंगार पृ० २००; शरीरक शृंगार पृ० २००-२०१; वक्षस्थलक शृंगार पृ० २०१-२०२, पयरक शृंगार पृ० २०२-२०३, निष्कर्ष पृ० २०३।

षष्ठम अध्याय

मिथिलाक आर्थिक स्थिति : कृषि पृ० २१०-२१९, शस्य रक्षाक व्यवस्था पृ० २१९-२२३, व्यापार पृ० २२३-२४८, मुद्रा पृ० २४८-२४९, टंक पृ० २४९, पण-पृ० २५०, कौड़ी, कर्षदक, वराटिका पृ० २५०-२५१, पुराण पृ० २५१, कार्शापण-पृ० २५१, काकिनी पृ० २५१-२५२, भाषा-पृ० २५२, कृष्णल पृ० २५३; पाद-पृ० २५३, सुवर्ण-पृ० २५३-२५४, दिनार-पृ० २५४, निष्क पृ० २५५, धानिका पृ० २५५, नाप-तौल पृ० २५५, कृष्णल पृ० २५५, द्रोण-पृ० २५६, आढ़क-पृ० २५७, कुम्भ पृ० २५७, भार पृ० २५७-२५८, खारी पृ० २५८, कुडव पृ० २५९, प्रस्थ पृ० २५९, कर पृ० २५९-२६१, निष्कर्ष २६२।

सप्तम अध्याय

दास-प्रथा पृ० २६३-२८१ ।

अष्टम अध्याय

प्रचलित वेश-भूषा : वस्त्र पृ० २८५-२८७, सूतक वस्त्र पृ० २८७-२८८, सरोमवस्त्र-पृ० २८८, क्षौमवस्त्र पृ० २८८, कौशेय वस्त्र पृ० २८९, कुशवस्त्र पृ० २८९, कृमिजवस्त्र पृ० २८९-२९०, मृगलोमजवस्त्र-पृ० २९०, वृक्षत्वक संभव वस्त्र- पृ० २९०, आविकवस्त्र पृ० २९०-२९२, नारीक वस्त्र-साड़ी-पृ० २९२-२९७; पुरुषक वस्त्र पृ० २९७-२९९, योगीक वस्त्र-पृ० २९९-३०१, कर्णाभूषण-पृ० ३०१-३०२, नाकक आभूषण पृ० ३०२; कण्ठक आभूषण-हार पृ० ३०२-३०७, कंठाभरण-पृ० ३०७, भूजा आओर हाथक आभूषण-केयूर-पृ० ३०७, टाड़-पृ० ३०८, कटक पृ० ३०८, कंकण-पृ० ३०८-३०९, मलया पृ० ३०९-३१०, चूड़ी-पृ० ३१०, अउठी पृ० ३१०-३११, कटिक आभूषण-किंकिणी-मेखला-पृ० ३११-३१२, पयरक आभूषण-पृ० ३१२-३१३, पादकटक-पृ० ३१३, मंजीर-पृ० ३१३, पाद अंगुरीयक-पृ० ३१४, पुरूषक आभूषण-शिरोभूषण-मुकुट पृ० ३१४, कानक आभूषण कुंडल-पृ० ३१४, हाथक आभूगण-अंगुठी-पृ० ३१४, निष्कर्ष पृ० ३१५ ।

नवम् अध्याय

मिथिलाक खान-पान : दिनुक भोजन-पृ० ३२१-३२५, रातिक भोजन-पृ० ३२५-३२८, माँछ- माँस-पृ० ३२८-३२९, माछ-३२९-३३०, माँस-पृ० ३३०-३३२, फल-पृ० ३३२- ३३४, विभिन्न प्रकारक खाद्य-पदार्थ-पृ० ३३४-३३७, पेय पदार्थ-पृ० ३३७- ३३८, दूध पृ० ३३९, मद्य-पृ० ३३९-३४१, मधु-पृ० ३४१, पान-पृ० ३४२-३४५, निष्कर्ष-पृ० ३४५ ।

दशम् अध्याय

मिथिलाक धार्मिक स्थिति : सूर्य-पृ० ३५८-३६३, गणपति पृ० ३६३-३६८ विष्णु पृ० ३६८-३९०, शिव पृ० ३९०-४१३, शक्ति पृ० ४१४-४२७, गंगा पृ० ४२७-४४०, निष्कर्ष पृ० ४४०-४४१ ।

आकर ग्रन्थक सूची पृ० ४४३-४६४ ।